प्रभा खेतान के उपन्यासों में आधुनिकता

डा. इशरत खान
प्रवक्ता, हिंदी गोवा विश्वविद्यालय

आधुनिकता एक जीवंत और गतिशील प्रक्रिया है। उसको रुढ़िगत मानसिकता से समझना उतना ही अनुचित है, जितना उसका प्रतिमानीकरण करना है।

आधुनिकता हिंदी साहित्य का बहुचर्चित विषय रहा है। डा. कृष्णाअग्निहोत्री, कमलेश्वर, रामदरश मिश्र, डा. नगेन्द्र, डा. सुरेशसिन्हा और डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय आदि ने आधुनिकता को अपनी-अपनी तरह से सोचा है, समझा है तथा परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं.....

— "आधुनिकता एक ऐसी मानसिक बौद्धिक स्थिति है जो अपने परिवेश और समाज की गहनतर समस्याओं से उद्भूत होती है और समकालीन जीवन को संस्कार देती है।"

– कमलेश्वर

— "मैं मानता हूँ कि आधुनिकता-बोध का अर्थ है, जीवन की नवीन चेतना का बोध।"

– श्री. रामदरश मिश्र

— "आधुनिक भाव-बोध नैतिकता और आदर्शों के विवेकहीन फरमानों को अमानवीय मानता है क्योंकि वे प्रत्यक्ष प्रमाण के बिना ही मनुष्य को दोषी या अपराधी ठहराते हैं।"

– डा. सुरेश सिन्हा

— "आधुनिकता का अर्थ शराब पीना, बीयर पीना, विवाहित बीवियों को तलाक़ देना, यूरोप के होटलों, रेस्ट्राओं का उल्लेख करना, परमिसिव सोसायटी का दम मरना आदि नहीं है, और न वह इतिहास व परम्परा से विच्छिन्न कोई क्रम ही है। सामाजिक साहित्य के सन्दर्भ में आधुनिकता और युगबोध का प्रश्न भी जुड़ा है।"

– डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

— "आधुनिकता का अर्थ व्यापक और गत्यात्मक ही मानना चाहिए। युगबोध, परम्परा का संशोधन, जीवन वैविध्य की यह स्पर्धा अपने पर्यावरण के माध्यम से आत्मनिष्ठ विकास की आकांक्षा आदि ही उसके लक्षण हैं, विघटन और विसंगतियाँ, निराशा और अवसाद आदि तक ही किसी भी युग की आधुनिकता को सीमित कर देना यथार्थ नहीं है और जो जीवन का लक्ष्य ही नहीं है, वही तब आधुनिकता का लक्षण कैसे हो सकता है?"

– डा. नगेन्द्र

मेरे विचार से आधुनिकता का सम्बन्ध अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों से होता है। आधुनिकता अतीत से प्रेरणा ग्रहण करती है, अपना प्राण-रस वर्तमान से ग्रहण करती है और भविष्य के प्रति शुभ संकेत करती है।

इसी आधुनिकता की प्रक्रिया में मूल्यों का निर्माण होता है।

स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं में अपने ईमानदार, वैविध्यपूर्ण एवं बहुमुखी। लेखन के कारण "प्रभाखेतान" बहुचर्चित लेखिका हैं। उन्होंने 'आओ पेपे घर चलें।', 'छिन्नमस्ता', 'अपने-अपने चेहरे' और 'पीली आँधी' जैसे उपन्यासों में आधुनिकता के विभिन्न आयामों को भरपूर उभारा है।

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों एवं नारी की शोचनीय स्थिति, आधुनिकता का एक

महत्त्वपूर्ण आयाम है। इस विषय पर उपन्यासों पर बहुत कुछ लिखा गया है और सतत लिखा भी जा रहा है।

प्रभा जी ने कलकत्ता महानगरी में बसे मारवाड़ी समाज का यथार्थ चित्रण, अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। प्रायः फिल्मों और कथाओं में मारवाड़ियों को कंजूस, धन के लोभी एवं विदूषक के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। उनकी औरतें अनपढ़, अन्धविश्वासी, व्रत-भजन में लीन इससे अधिक नहीं समझी जाती हैं। धन-वैभव के बीच छटपटाती मारवाड़ी समाज की नारियों का दिनेशनन्दिनी डालमिया ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है लेकिन वह सिर्फ एक घराने की भीतरी कथाएँ होकर रह गई हैं, लेकिन इस समाज के अन्तर्विरोधों और अन्तःसंघर्षों को यथार्थ रूप में स्वर प्रभा खेतान ने दिया है।

राजस्थान की कठिन और जीवन की जानलेवा स्थितियाँ, मनुष्य में जिजीविषा, लगन, कुछ बनकर दिखाने की ज़िद पैदा करती हैं, उन्हीं ने बड़े-बड़े औद्योगिक घरानों को जन्म दिया है।

शिक्षा, परिवेश के दबाव, बंगाल की सामाजिक जागरुकता के बीच प्रभा जी की स्त्री, अपने जीवन का चुनाव अपनी तरह करना चाहती हैं वह स्वयं अपने आर्थिक स्त्रोत अर्जित करती हैं और इस प्रक्रिया में भयंकर मानसिक-भावात्मक घातों-प्रतिघातों से गुज़रती हैं। इसी की कहानी है, 'छिन्नमस्ता' और 'पिली आँधी'। सिर्फ बाहरी नहीं, प्रभा जी ने साहसपूर्वक औरत की निहायत निजी, गोपनीय परतों की तह-दर-तह खोला हैं। जहाँ वह सेक्सविकृतियों का शिकार होती है, बलात्कार और तृप्तिदायक सम्भोगों, वैध-अवैध सम्बन्धों आदि कठिन मार्गों से गुज़रती है, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीबाज़ारों से जूझती है। प्रभा जी के यहाँ पुरानी औरत खुद अपने हाथों से अपना सिर काटने वाली और अपनी ही आग से जन्म लेने वाली महाशक्ति के मिथक उसे महान् स्त्रीवादी वैचारिकता से जोड़ते हैं

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में उपर्युक्त पक्षों को ईमानदारी के साथ उभारा गया है। इसको प्रिया, तिलोत्तमा, दाई माँ, प्रिया की सास, प्रिया की माँ कस्तूरी और नीना आदि नारी पात्रों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

इस उपन्यास की नायिका 'प्रिया' एक ऐसी नारी है जो निरन्तर शोषित है, समाज की जर्जर मान्यताओं से भी और पुरुष की आदिम भूख से भी। नारी की इस दयनीय स्थिति को परिचय इन पंक्तियों में मिलता है —

"औरत कहाँ नहीं रोती ? सड़क पर, झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट पर, बाथरुम साफ करते हुए या फिर सारे भोग-ऐश्वर्य के बावजूद मेरी सासू जी की तरह पलँग पर रात-रात-भर अकेले करवटें बदलते हुए। हाड़ मांस की बनी ये औरतें --- अपने-अपने तरीक़े से जिन्दगी जीने की कोशिश में छटपटाती ये औरतें। हज़ारों सालों से इनके ये आँसू बहते आ रहे हैं।" (छिन्नमस्ता उपन्यास से)

'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास में एक अमीर परिवार में होने वाली नारी-समस्याओं को दर्शाया गया है।

विवाह और उनसे जुड़ी समस्याओं के प्रति एक नया दृष्टिकोण भी आधुनिकता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। नारी एक हद तक अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाने प्रयास करती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है 'प्रिया' - जब प्रिया अपने पति नरेन्द्र की बिलख रही प्रेमिका को अपने कमरे में ले आती है। सौत सरीखी औरत के लिए यह सहानुभूति शायद ही कोई छिन्नमस्ता ही रख सकती है। लेकिन जब पति के अत्याचारों की

इति हो जाती है तो वह पति क्या अपने बच्चों तक का त्याग कर देती है। 'रेत की मछली' में कुन्तल अपनी बच्ची 'तोरु' का त्याग करती है और प्रिया अपने एकलौते पुत्र का मोह भी छोड़ देती है। पति से सम्बन्ध विच्छेद कर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाती है।

यौन-सम्बन्धी दृष्टि भी आधुनिकता का एक महत्त्वपूर्ण सोपान हैं। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास इसी समस्यो पर केन्द्रित है। सेक्स के स्तर प्रिया का शोषण, बचपन में बड़े भाई द्वारा, कॉलेज में पढ़ते हुए लेक्चरर द्वारा धोखा, और विवाह के बाद पति नरेन्द्र की वहशी भूख के कारण होता है। इसी कारण उसे अपने औरतपने से चिढ़ हो जाती है। इसी को स्वर देती हैं – प्रभा जी – इस सन्दर्भ में उनका कहना है ..... ''छिन्नमस्ता उपन्यास लिखते समय सबसे पहली बात जो मेरे ज़ेहन में थी, वह कि, जन्म से लेकर मृत्यु तक पग-पग पर स्त्री जिस यौन-उत्पीड़न को झेलती है और जिसके बारे में हमें हमेशा खामोश रहती है या यों कहें कि व्यवस्था उसे ऐसा करने पर मज़बूर करती है। स्त्री की उसी खामोशी को मुझे शब्द देता है, मेरे अक्षर की शुरुआत यहीं से हुई है।''

आधुनिकता का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष है - दूसरी नारी का प्रवेश। अर्थात पति-पत्नी के मध्य जब किसी अन्य नारी का आगमन होता है। इसको 'रखैल' नाम का नाम भी दिया गया है। इसको हम परम्परागत सामन्ती व्यवस्था भी कह सकते है। इन रखैलों का स्थान समाज में उपेक्षित तथा अपने रक्षक-पालक के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहीं हैं। प्रभा खेतान के प्रायः सभी उपन्यासों मे इस प्रकार भी नारियों को स्थान दिया गया है।

'छिन्नमस्ता' में नीना की माँ, तथा 'अपने-अपने चेहरे' में रमा आँटी इसी प्रकार की नारियाँ हैं। जोकि अपने पालकों के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित है। प्रिया, ससुर की रखैल से अपने वैध सम्बन्ध स्थापित करती है और उसकी बेटी को अपने व्यापार में शामिल करती है और एक माँ की ममत तले उसका विवाह धूमधाम से करती है। रमा आँटी भी अपने रक्षक की बेटी रीतू को सहारा देती है।

महिला-उपन्यासकारों ने भारतीय परिवेश के साथ ही विदेशी परिवेश पर को भी उपन्यास का विषय बनाया है।

उन्होंने वहाँ के परिवेश का यथार्थ वर्णन करने में आधुनिकता का परिचय दिया है। इस सन्दर्भ में मासिरा शर्मा का जिन्दा मुहावरे', मंजुल भगत का 'खातुल', उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'शेषयात्रा' अन्तर्वंशी, तथा प्रभा खेतान का 'आओ पेपे घर चले !' आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

आओ पेपे घर चले ! उपन्यास में अमेरिका में बसी भारतीय नारियों एवं अमेरिकन नारियों की स्थिति का प्रामाणिक दस्तावेज़ प्रस्तुत किया गया है।

आधुनिकता का महत्त्वपूर्ण आयाम है नारी-चेतना। हिन्दी की महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में परम्परा एवं रूढ़ियों को तोड़ती व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए जूझती अपने प्रयासों में सफल होती है। इसके साथ ही नवीन मूल्यों को आत्मसात करने के प्रयास में रत नारी का सशक्त रुप प्रस्तुत किया है।

इस सन्दर्भ में प्रभा खेतान का योगदान महत्त्वपूर्ण हो जाता है। प्रिया को विद्रोहिणी बनाने के मूल में अनेक यातनाओं का इतिहास है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया बचपन से सब भाई बहनों के मध्य उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाती है। परिवार में उसका स्थान सदैव दोयम दर्जे का रहा है। वह दाई माँ की बेटी है, कस्तुरी की नहीं। बचपन में सगे बड़े भाई द्वारा बलात्कार एवं कॉलेज में अध्यापक के हविस का शिकार होती है और

अत्याचारी पति के साथ देह एंव पारिवारिक - सम्बन्ध निभाती है।

और अन्त में अपने पैरों पर खड़ा होने का फैसला करती है। परिवार, समाज का विरोध सहते हुए वह अपना व्यापार प्रारम्भ करती है और समाज में अपनी एक अच्छी पहचान बनाती है। इस कार्य में सहयोग देते है विदेशी (हालैंड) के मित्र दम्पत्ति (फिलिप और जूडी) तथा नीना और माँ।

इस सन्दर्भ में एक उदाहरण देखिए ..... "व्यवस्था को तोड़ने वाली औरत को जहाँ समाज सौ कौड़े लगाता है वही पुरुष को मंच पर क्रान्तिकारी कहकर बैठाता है। औरत हर तरह मरती है, लेकिन मुझे रोती हुई औरत नहीं अच्छी लगती। मुझे औरत की इस निष्क्रियता पर झुंझलाहट होती है। यह क्या घुट-घुट कर मरना।" ('छिन्नमस्ता' उपन्याससे)

'पीली आँधी' की छोटी बहू भी अवांछित पति एवं अपने अनुकूल कुल-ख़ानदान की इज़्ज़त-मर्यादा को छोड़कर अपने वांछित पुरुष प्रोफेसर के साथ चली जाती है।

जिस प्रकार मूल्यों व नैतिकताओं के द्वन्द्व में आधुनिक दृष्टि समाहित होती है उसी प्रकार वर्गगत चेतना के द्वन्द्व में भी आधुनिकता का स्पष्ट समावेश देखा जा सकता है। इस सन्दर्भ में प्रेमचन्द, यशपाल, नागार्जुन और रांगेय राघव आदि के उपन्यासों को उदाहरण स्वरुप रखा जा सकता है। इस क्षेत्र में भी महिला लेखिकाएँ पुरुषों से पीछे नहीं रहीं है।

प्रभा खेतान के 'पीली आँधी' उपन्यास में सौ-डेढ़-सौ की सामन्तीय यात्रा को वर्णित किया गया है। मार्क्सवाददी विचारधार पर आधारित है, उपन्यास 'तालाबन्दी'। इसमें श्यामबाबू अपने कारखाने की श्रमिक समस्या को हल करने के लिए मार्क्सवाद की शरण में जाते हैं उनका विचार है कि मार्क्स के सिद्धान्त को समझे बिना भला कोई कैसे निदान ढ़ढ सकता है।

आधुनिकता को एक ओर सोपान है भाषा। प्रभा कृत छिन्नमस्ता उपन्यास में आधुनिक भाषा की समस्त विशेषताएँ पायी जाती हैं जैसे .....

- विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग।
- बिम्ब और प्रतीक
- मुहावरे और लोकोक्तियाँ
- काव्यमय भाषा
- विभिन्न आधुनिक विचारधाराओं के अनुकूल भाषा-प्रयोग।

लेखिका अपने मातृभाषा मारवाड़ी का बेझिझक प्रयोग करती है। इस सन्दर्भ कुछ उद्धरण द्रष्टव्य है -

- "चोखो भाया, म तो जाऊं सोने, आधी रात से अपर होगी"
- "कस्तूरी ! तेरी यह छोरी तो भोत ही माथो खा जाव।"

इस प्रकार प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता', अपने-अपने चेहरे उपन्यासों में आधुनिकता का स्वर अपने श्रेष्ठतम् रुप में उभरा है।

सहायक ग्रन्थ :-

१) **प्रभा खेतान :** आओ पेपे घर चलें !
२) **प्रभा खेतान :** छिन्नमस्ता
३) **प्रभा खेतान :** अपने-अपने चेहरे
४) **प्रभा खेतान :** तालाबन्दी
५) **प्रभा खेतान :** पीली आँधी
६) **नीहार गीते :** स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्याकारों के उपन्यास में यथार्थ के विभिन्न रूप
७) **डा. मधु सन्धु :** महिला उपन्यासकार
८) **डा. अमर ज्योति :** महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि